एक समय महत्वपूर्ण स्थान हासिल कर चुके बौद्ध धर्म के पतन का कारण बताएं —

भूमिका :
भारत में बौद्ध धर्म ने मौर्य काल से लेकर गुप्त काल तक अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की। यह धर्म अहिंसा, समानता और करुणा पर आधारित था तथा इसे राजाओं और जनसामान्य दोनों का संरक्षण मिला। किंतु सातवीं शताब्दी के बाद इसका प्रभाव धीरे-धीरे घटने लगा और बारहवीं शताब्दी तक यह लगभग विलुप्तप्राय हो गया।

---

१. हिंदू धर्म का पुनरुत्थान:

गुप्त काल में वैष्णव और शैव संप्रदायों का पुनर्जागरण हुआ।

बौद्ध धर्म के कई सिद्धांत (अहिंसा, ध्यान, भक्ति) हिंदू धर्म में समाहित हो गए।

परिणामस्वरूप लोगों को बौद्ध धर्म अपनाने की विशेष आवश्यकता नहीं रही।

---

२. बौद्ध संघों में अनुशासनहीनता:

प्रारंभिक काल में संघ अत्यंत अनुशासित था, परंतु बाद में उसमें ढिलाई आने लगी।

भिक्षु विलासप्रिय हो गए और लोककल्याण की भावना कमजोर पड़ गई।

इससे आम जनता का विश्वास घटने लगा।

---

३. बौद्ध धर्म का अत्यधिक विभाजन:

हीनयान, महायान, वज्रयान जैसी शाखाओं में मतभेद बढ़े।

सिद्धांतों की एकरूपता समाप्त हो गई, जिससे धर्म की एकता और प्रभाव दोनों कम हो गए।

---

४. राजकीय संरक्षण का अभाव:

अशोक, कनिष्क आदि के बाद बौद्ध धर्म को कोई शक्तिशाली संरक्षक नहीं मिला।

गुप्त और उत्तरवर्ती शासक मुख्यतः वैदिक-हिंदू परंपराओं के समर्थक थे।

---

५. विदेशी आक्रमण और विहारों का विनाश:

12वीं शताब्दी में तुर्की-मुस्लिम आक्रमणों के दौरान नालंदा, विक्रमशिला और ओदंतपुरी जैसे प्रमुख बौद्ध विश्वविद्यालय नष्ट कर दिए गए।

हजारों भिक्षु मारे गए या तिब्बत और नेपाल की ओर पलायन कर गए।

---

६. लोक से दूरी और कठिन साधना पद्धति:

बौद्ध साधना अत्यधिक दार्शनिक और संयम-प्रधान हो गई।

आम जनता के लिए यह कठिन और जटिल प्रतीत होने लगी, जबकि हिंदू भक्ति आंदोलन ने सरल उपासना का मार्ग प्रदान किया।

---

७. बाहरी देशों में प्रसार:

भारत में प्रभाव घटने के साथ-साथ बौद्ध धर्म श्रीलंका, चीन, तिब्बत, जापान आदि देशों में तेजी से फैल गया।

इसका केंद्र धीरे-धीरे भारत से बाहर स्थानांतरित हो गया।

निष्कर्ष :

बौद्ध धर्म के पतन का कारण किसी एक घटना में नहीं, बल्कि कई सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक कारणों में निहित था।
फिर भी, इसकी शिक्षाएँ — अहिंसा, करुणा, और मध्यम मार्ग — आज भी विश्व के नैतिक चिंतन और मानवता की आधारशिला बनी हुई हैं।